अधिक जानकारी के लिए, दिए गए कोड को स्कैन करें या देखें http://www.nizamuddinrenewal.org एंव लाइक करें www.facebook.com/NizamuddinRenewal

कहानियाँ बच्चों को सुनने में तो रोचक लगती ही हैं, साथ ही उनके भाषा विकास और जानकारी भी बेहतर होती है। अभी हाल ही में आग़ा ख़ान फाउण्डेशन द्वारा "अपनी बस्ती मेला" के दौरान बच्चों को ढेर सारी कहानियाँ सुनने और लिखने का मौका मिला। रंग–तंरग के इस अंक में बच्चों द्वारा लिखी कुछ चुनिन्दा कहानियों को प्रकाशित किया गया है। उम्मीद है आपको पसंद आयेंगी।

शुक्रिया!

मोहम्मद नसीम
(प्रधानाचार्य)

दक्षिणी दिल्ली नगर निगम सहशिक्षा प्रतिभा विद्यालय, निज़ामुद्दीन (पश्चिम), नई दिल्ली

निज़ामुद्दीन शहरी विकास नवीकरण

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण । दक्षिण दिल्ली नगर निगम । केंद्रीय लोक निर्माण विभाग
आगा ख़ान फाउंडेशन । आगा ख़ान ट्रस्ट फॉर कल्चर

आग़ा ख़ान डेवलेपमेंट नेटवर्क

रंग तरंग

दिसम्बर 2014

बारिश

1

काले–काले बादल आए
बारिश हुई छमा–छम–छम
फूल में तितली आई
चिड़िया भी उड़ती आई
मेढ़क पानी में नहाए
चिड़िया ने एक गाना गाया
तितली ने भी नाच दिखाया

– ख़तीजा कुल्सूम, कक्षा 3

आँगनवाड़ी में हमने सीखा

2

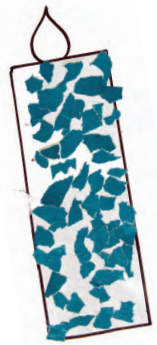

– **नामः** बिष्मा, साना
साएबा, आफरीन
इल्मा, अल्फिशा

एक बार एक पंडित बादशाह अकबर के दरबार में आया। उसने अकबर से कहा कि मेरा दावा है कि मेरी मातृभाषा कोई नहीं बता सकता। अकबर के दरबार में करीब–करीब सभी भाषाओं के जानने वाले लोग मौजूद थे। उसने अपने सभी दरबारियों से पूछा कि आप में से कौन है जो इसके दावे को झुठला सके। सभी दरबारियों ने पण्डित से बारी से आलग–अलग भाषाओं में बात की। पण्डित बिना अटके सभी बड़ी चतुराई से सभी के प्रश्नों का उन्हीं की भाषा में जवाब दिए चला गया। अन्त में बादशाह ने बीरबल की तरफ देखा। बीरबल ने अकबर से एक दिन की मोहलत माँगी। उसने पण्डित को महल के एक आलीशान कमरे में ठहरा दिया। रात को जब पण्डित गहरी नींद में से रहा था तब बीरबल उसके कमरे आया और एक तिनके को उसकी नाक में कर वहीं पास में छिप गया। पण्डित की आग खुल गई और वह ज़ोर से चिल्लाने लगा।

दूसरे दिन बीरबल ने दरबार में बताया कि पण्डित की मातृभाषा तेलगु है। पण्डित को बड़ा अचम्भा हुआ। उसने बीरबल से पूछा कि आपको कैसे पता लगा। बीरबल ने रात का पूरा किस्सा बताते हुए कहा ''महाराज लोग जब अपने आप से बात करते हैं तो हमेशा अपनी मातृभाषा में ही बोलते हैं।''

– **चित्रांकन एवं कहानी** : अबू बकर (कक्षा 4)
समीर (कक्षा 4)

एक जंगल में सभी जानवर हँसी–खुशी से रहते थे। एक दिन एक शिकारी आया। उसने मोर को फसाने के लिए एक बड़ा सा पिंजरा रखा और उसमें बहुत से दाने डाल दिए। एक हाथी ने उसे यह सब करते देख लिया। मोर जब दाना चुगते–चुगते उस पिंजड़े में जाने ही वाला था। हाथी दौड़ता आया और पिंजरे को सूँड से उठा कर फेंक दिया। मोर ने हाथी का शुक्रिया अदा किया। शिकारी को बड़ा गुस्सा आया। उसने सोचा क्यों न इस हाथी को पकड़ कर किसी सर्कस में बेच दिया जाए। इससे तो उसे बहुत सारे पैसे मिल सकते है। और वह अमीर भी बन सकता है।

शिकारी ने हाथी को फसाने के लिए एक बड़ा–सा गढ्ढा खोदा और उसे झाड़ियों और पत्तों से ढक दिया। वह छिपकर बैठ गया और हाथी के वहाँ से गुज़रने का इंतज़ार करने लगा। एक चिड़िया उसे यह सब करते देख रही थी। उसने सभी जानवरों को इकट्ठा किया। सभी जानवरों ने शिकारी को सबक

सिखाने की योजना बनाई ताकि शिकारी फिर किसी जानवर को पकड़ने की हिम्मत न जुटाए।

सभी जानवर मिलकर एक साथ शिकारी पर टूट पड़े। शिकारी के हाथ–पाँव फूल गए और वह भागने लगा। भागते–भागते वह उसी गढ्ढे में जा गिरा जो उसने हाथी के लिए तैयार किया था। बड़ी मुश्किल से वह गढ्ढे से बाहर आया। उसके बाद उसने फिर कभी उस जंगल का रुख़ नहीं किया।

– **चित्रांकन एवं कहानी** : अरजीना (कक्षा 3)
सोनिया (कक्षा 3)
खुशी (कक्षा 3)

राजू के घर और स्कूल के बीच के रास्ते में बरगद का एक बड़ा पेड़ था। राजू को वह पेड़ बहुत पसन्द था। वह अक्सर स्कूल से आते–जाते उस पेड़ के पास ज़रूर रुकता था। एक दिन राजू ने उस पेड़ के नीचे एक बड़ा सा गढ्ढा देखा। जैसे ही उसने उस गढ्ढे में झाँक कर देखना चाहा, उसका पैर फिसल गया और वह गढ्ढे में जा गिरा। अन्दर पहुँच कर उसने देखा कि जैसे सारी दुनिया ही उल्टी हो गई थी। वहाँ सभी बस और गाड़ियाँ पानी में चल रही थीं। लोग पैरों में टोपी पहने हुए थे। घर के दरवाज़े अन्दर और घर बाहर थे। लोग चाभी अन्दर रख ताला लगाते थे। वहाँ दूध की बारिश हो रही थी। बच्चे हाथ के बल चल रहे थे। मेज़–कुर्सियाँ भी उल्टी थीं। राजू को कुछ समझ नहीं आ रहा था। उसे बाहर निकलने का भी कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था। पर उसने हिम्मत नही हारी। तभी उसकी मुलाकात एक लड़के से हुई। वह डरा–डरा सा था। राजू ने उससे बाहर जाने का रास्ता पूछा तो उसने कहा कि वह भी गलती से इस अनौखी दुनिया में आ गया है। उसके बाद दोनों मिलकर रास्ता ढूँढने निकल पड़े। बहुत दूर

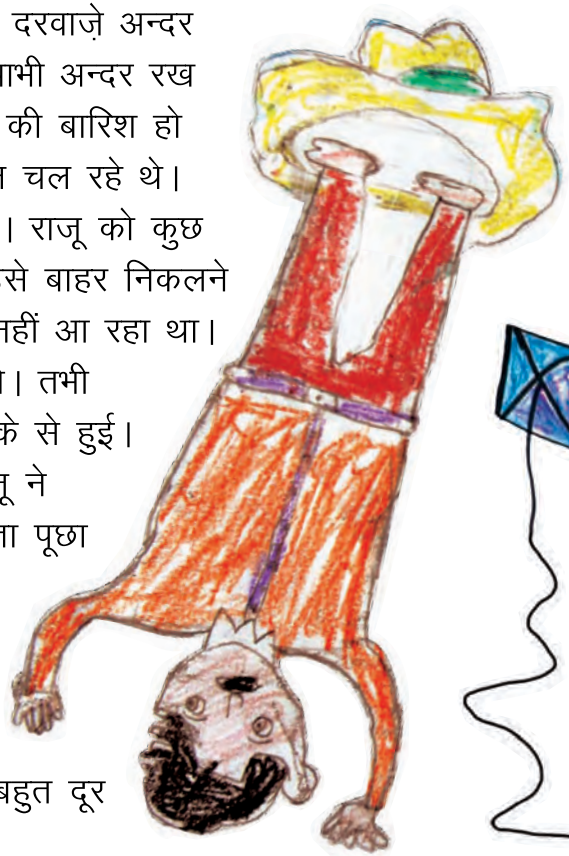

चलकर वह थक से गए थे। दोनों आराम करने के लिए एक पेड़ के नीचे रुके और लेट गए। अचानक राजू की नज़र पेड़ के बीच में से आ रही एक तेज़ रोशनी पर पड़ी। दोनों पेड़ पर चढ़ कर उस रोशनी की तरफ बढ़े। थोड़ी ही देर में वे दोनों अपनी दुनिया में थे। राजू ने उस लड़के का शुक्रिया अदा किया। और फिर कभी इस पेड़ के पास नहीं आया।

— **चित्रांकन एवं कहानी** : सिमरन (कक्षा 5)
साहिबा (कक्षा 5)

नवम्बर माह में हमारी बस्ती में एक मेला लगा। इसका नाम था 'अपनी बस्ती मेला'। हम सब बच्चे मेला घूमने गए। जैसे ही हम मेले में पहुँचे तीन लंबी टाँगों वाले आदमी हमारे सामने आ गए। पहले तो हमें समझ ही नहीं आया कि इतने लंबे आदमी भी हो सकते है क्या? लेकिन जब हमने उससे बात की तो पता लगा कि उन्होंने पैरों में बाँस लगा रखे हैं। उसके बाद हमारी मुलाकात डोरेमोन से हुई। उसने बारी–बारी से हम सबसे हाथ मिलाया।

मेले में थोड़ा आगे बढ़े तो देखा दाएँ हाथ की तरफ एक बड़ा–सा स्टेज था। एक जादूगर वहाँ पर जादू दिखा रहा था। उसने हमें एक जादू भी सिखाया। उसने एक कागज़ के गिलास में पानी भरा उसके ऊपर एक कागज़ रखा और गिलास को उल्टा कर दिया। कमाल की बात कि गिलास में से एक बूँद पानी भी नहीं गिरा। जादूगर भैया ने बताया कि यह सब विज्ञान का खेल है। गिलास के ऊपर कागज़ रखने से वह गिलास से चिपक गया और गिलास में हवा को अन्दर जाने से रोक दिया। बस पानी नहीं गिरा।

मेले में तरह–तरह के खेल खिलाए जा रहे थे। अरे वाह! यह क्या? कोई भी कूड़ा या पन्नी उठा कर दो और इनाम पाओ। काश सचमुच ऐसा होने लगे तो हमारी बस्ती कितनी साफ हो जायेगी!

मेले में बहुत सारी दुकाने लगी थीं। एक स्टॉल हमारे स्कूल की मेम ने भी लगाया हुआ था। मैम ने हमसे एक पर्ची उठाने को कहा। उस पर एक सवाल लिखा था। अगर सवाल का जवाब सही तो एक इनाम में एक टॉफी! वरना टॉय–टॉय फिस! चलो आगे बढ़ो! आगे एक दूसरी मैम ने हमें कुछ वर्णों व शब्दों के फ्लैशकार्ड दिए। वर्णों को जोड़कर हमें कोई शब्द बनाना था और शब्दों को जोड़कर वाक्य। अगर ठीक से बना तो फिर एक टॉफी!

इतने में माइक से आवाज़ आई। अरे वाह! स्टेज पर मेम कहानी सुनाने वाली हैं। हम सब वहाँ दौड़ पड़े। कहानी सुनाने के बाद मेम हमें लायब्रेरी कॉर्नर पर ले आईं। वहाँ हमने अपनी कुछ कहानियाँ बनाई। और फिर उनके चित्र भी बनाए।

मेले में मैम ने हमें बहुत सारी चीज़ें बनानी सिखाईं। हमने कागज़ से चूहा, बॉल मछली और गुड़िया बनानी सीखी। आइसक्रीम के चम्मच से सूरज और लैम्प बनाना सीखा। मैम ने हमारे बहुत सारे फोटो खींचें।

अपनी बस्ती मेला 2014

अपनी बस्ती मेला 2014

आँगनवाड़ी के बच्चों के लिए ख़ास नाटक “Bends & Flows”

कामकाजी माओं के छोटे बच्चों के लिए कोट मौहल्ला में क्रेश